महीपाल

राँची महाधर्मप्रान्त का मासिक पत्र

सन्त फ्रान्सिस जेवियर
राँची महाधर्मप्रान्त के संरक्षक

October 2018 No. 2

महाधर्माध्यक्ष का संदेश

ख्रीस्त में मेरे प्रिय भाइयो और बहनो,

ईश्वर ने मनुष्य को इतना प्यार किया कि उसने अपने एकलौते पुत्र येसु मसीह को इस संसार में भेजा (दे० योहन 3:16)। प्रभु येसु ने हमारी मुक्ति के लिए शरीर धारण किया, हमारे पापों की क्षमा के लिए अपने को क्रूस पर बलिदान चढ़ाया और पुनर्जीवित होकर हमें अनन्त मृत्यु से बचा लिया। उसने अपनी शिक्षा को जीवित तथा सुरक्षित रखने और फैलाने के लिए कलीसिया की स्थापना की। कलीसिया धर्मग्रंथ के ईश-वचन, संस्कारों, धार्मिक अनुष्ठानों, विभिन्न लोगों के प्रवचनों, संतों के उदाहरणों और लहूगवाहों के साक्ष्यों से प्रभु की शिक्षा को सुरक्षित रखती, लोगों को पवित्रता के मार्ग पर ले जाती और सुसमाचार की साक्षी देती रहती है। कलीसिया के इतिहास में प्रेरितों के अलावा ऐसे अनगिनत पुरुष और महिला संत तथा लहूगवाह हुए हैं जिन्होंने विश्वास में अडिग रहकर प्रभु का साक्ष्य या तो अपनी पवित्र जीवनचर्या से अथवा जीवन का बलिदान चढ़ाकर किया। धन्य हैं ये संत और लहूगवाह!

हमारे समाज में ऐसे गरीब और अनपढ़ लोग हैं जिनकी जमीन छीनी जा रही है,
उन पर अत्याचार हो रहे हैं
और उनका शोषण हो रहा है।
जो समाजसेवी ऐसे निर्बल लोगों का पक्ष लेकर उनकी और उनके अधिकारों की रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं,
उनपर झूठा दोषारोपण कर उन्हें विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया जा रहा है।

हमारे धर्म में बहुत-सी रहस्यात्मक सच्चाइयाँ हैं जिन्हें हम अपनी छोटी बुद्धि से नहीं समझ सकते हैं। परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा दी हुई प्रज्ञा की शक्ति से हम उन्हें जानते, उनपर विश्वास करते और ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीते हैं। यह सच है कि प्रभु येसु की शिक्षा के अनुसार जीवन यापन करना कठिन है। इसका आन्तरिक कारण यह है कि आदि पाप के कारण मनुष्य में अच्छाई और बुराई का द्वन्द लगातार चलता रहता है। जहाँ पवित्र आत्मा मनुष्य को अच्छाई, विनम्रता, पवित्रता, धार्मिकता और प्रेममय सेवा की ओर आकर्षित करता है तो शैतान उसे बुराई, अहंकार, दुष्टता, लम्पटता और स्वार्थ-साधना की ओर ढकेलता-घसीटता है। जो शैतान की प्रेरणा से जीता है, वह धन, शक्ति और नाम खोजता है। इन्हें पाने के लिए वह कोई भी अनैतिक काम करता है, चाहे किसी को मार डालना ही क्यों न हो। यही मूलकारण है कि कलीसिया के इतिहास में समय-समय पर और विभिन्न जगहों में मसीही विश्वासियों पर सतावट आती रही है। हमारे प्रभु ने कहा है, "मैंने तुमसे जो बात कही, उसे याद रखो — सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता। यदि उन्होंने मुझे सताया, तो वे तुम्हें भी सतायेंगे। यदि उन्होंने मेरी शिक्षा का पालन किया, तो वे तुम्हारी शिक्षा का भी पालन करेंगे"(योहन 15:20)। आज भी कई देशों में मसीही विश्वासियों को सतावटों का सामना करना और जीवन खोना पड़ रहा है।

दुर्भाग्य की बात है कि हमारी मातृभूमि में ऐसी ताकतें सक्रिय हैं जो अनेकता में एकता के सिद्धान्त को त्यागकर धर्म की आड़ में एकरूपता वाले सिद्धान्त को फैला रही हैं। इस सिद्धान्त को मनवाने के पीछे उनकी आशा है कि वे सम्पूर्ण देश को अपने कब्जे में रखकर धन, शक्ति और नाम कमा लेंगे। देश को अपने कब्जे में पाने के लिए वे अनैतिक साधनों का प्रयोग करते हैं। हमारे समाज में ऐसे गरीब और अनपढ़ लोग हैं जिनकी जमीन छीनी जा रही है, उन पर अत्याचार हो रहे हैं और उनका शोषण हो रहा है। जो समाजसेवी ऐसे निर्बल लोगों का पक्ष लेकर उनकी और उनके अधिकारों की रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं उनपर झूठा दोषारोपण कर उन्हें विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया जा रहा है। उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। हमारे राज्य में भी हमारी संस्थाओं पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ऐसे दोषारोपण और अत्याचार हो रहे हैं।

प्रभु येसु ने हमसे कहा है, "धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारा अपमान करते हैं, तुमपर अत्याचार करते और तरह-तरह के झूठे दोष लगाते हैं। खुश रहो और आनन्द मनाओ-स्वर्ग में तुम्हें महान् पुरस्कार प्राप्त होगा। तुम्हारे पहले के नबियों पर भी उन्होंने इसी तरह अत्याचार किया"(मत्ती 5:10-12)। महान् संत पौलुस के इन वचनों द्वारा हममें सांत्वना और शक्ति का संचार होता है, "हम कष्टों से घिरे रहते हैं, परन्तु कभी हार नहीं मानते; हम परेशान होते हैं, परन्तु कभी निराश नहीं होते। हमपर अत्याचार किया जाता है, परन्तु हम अपने को परित्यक्त नहीं पाते। हमको पछाड़ दिया जाता है परन्तु हम नष्ट नहीं होते। हम हर समय अपने शरीर में येसु के दु:खभोग तथा मृत्यु का अनुभव करते हैं, जिससे येसु का जीवन भी हमारे शरीर में प्रत्यक्ष हो जाए"(2 कुरि० 4:8-11)।

हमारे प्रभु ने हमें आश्वासन दिया है कि वे संसार के अंत तक सदा हमारे साथ हैं (दे० मत्ती 28:20)। हम अपने विश्वास में अडिग रहें; भक्ति-भाव से ईश्वर की महिमा-पूजा करते रहें; सच्चाई का दामन पकड़कर पड़ोसी की सेवा करते रहें। माता मरियम आपके और आपके परिवार की रक्षा करे!

✠फेलिक्स टोप्पो, ये०सं०

स्थानीय समुदाय को कार्डिनल टोप्पो का धन्यवाद ज्ञापन

विगत 6 अगस्त को महाधर्माध्यक्ष पद पर अति मान्यवर फेलिक्स टोप्पो, ये॰सं॰, के पदस्थापन के बाद माता मरियम के निष्कलंक गर्भागमन महागिरजाघर राँची में ही अभिनन्दन का एक लघु समारोह आयोजित किया गया। प्रस्तुत है, उसमें कार्डिनल तेलेस्फोर पी॰ टोप्पो का विश्वासी समुदाय के प्रति धन्यवाद ज्ञापन :

"जून 1978 में, जब दुमका के धर्माध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने के लिए मेरे नाम की घोषणा हुई, तभी मैंने हमारे प्रभु येसु मसीह की इस पुकार को अपना नारा बनाया — "प्रभु का मार्ग तैयार करो।" (मत्ती 3:3) विनम्र आदिवासी पृष्ठभूमि के मुझ अयोग्य सेवक को प्रभु ने अपना मार्ग तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी। मुझे हमेशा अपनी अयोग्यता और मानवीय सीमाओं का अहसास रहा, परन्तु महान् प्रेरित पौलुस के ये शब्द सम्पूर्ण कार्यकाल में मेरा हौसला बढ़ाते रहे — "मैं बड़ी खुशी से अपनी दुर्बलताओं पर गौरव करूँगा, जिससे मसीह का सामर्थ्य मुझपर छाया रहे। ... क्योंकि मैं जब दुर्बल हूँ, तभी बलवान हूँ।" (2 कुरि॰ 12:10)

वर्ष 1984 के इसी माह (अगस्त) में मुझे राँची महाधर्मप्रान्त में स्थानान्तरित किया गया। भौगोलिक और सामाजिक विविधता से भरे हुए इस व्यापक क्षेत्र में कलीसियाई अगुवे की जिम्मेदारी संभालना अपने आप में बड़ी चुनौती रहा, परन्तु पिछले 34 सालों के लम्बे कार्यकाल में प्रेरित पौलुस के उत्साहवर्द्धक शब्द और प्रभु येसु मसीह की उपरोक्त पुकार ने मेरा हौसला बनाये रखा। इस बीच मुझपर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती रहीं। कार्डिनल बनाये जाने के काफी पहले एशिया स्तर पर सुसमाचारी साक्ष्य का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा गया। इस सम्मानित पद को मैं "छोटानागपुर के प्रेरित" और प्रभु के सेवक, फादर कोन्सटंट लीवन्स और उनके उत्साही साथी सुसमाचार-वाहकों की चमत्कारिक मेहनत के प्रति कलीसियाई सराहना मानता हूँ।

ईश्वर की दया से सिर्फ एक शताब्दी में छोटानागपुर की कलीसिया ने मसीही साक्ष्य का जो अनूठा परिचय दिया, निश्चय ही उसकी विश्व स्वीकृति है, मुझ अयोग्य व्यक्ति को कार्डिनल का सम्मान दिया जाना। महान् सन्त, सन्त पापा जोन पॉल द्वितीय ने मुझसे कहीं अधिक यह सम्मान तो छोटानागपुर की कलीसिया को दिया है। इसीलिए कई अवसरों पर मैंने कहा कि ईश्वर की अपार करुणा से छोटानागपुर की कलीसिया अब प्रौढ़ हो गयी है।

प्रिय माता-पिता, भाई-बहनो और बेटे-बेटियो, आप सब लोग उपरोक्त कलीसियाई सम्मान के भागीदार हैं। इस अवसर पर मैं समस्त छोटानागपुर के विश्वासियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आप सबने मेरे साथ उदारता पूर्वक सहयोग किया और एक साथ मिलकर प्रभु के सेवक, फादर कोन्सटंट लीवन्स के आदर्शों के अनुसार यहाँ "सुसंगठित और अनुशासित समुदाय" के गठन के लिए काम किया है। मेरा आग्रह है कि आपसी मतभेदों को भुलाकर आप सब इस प्रयास को जारी रखेंगे। मैं भले ही प्रकट रूप से आप सबके साथ कम नजर आऊँ, परन्तु मेरी प्रार्थनाओं में आपकी याद तरोताजा रहा करेगी। नवनियुक्त महाधर्माध्यक्ष, महामान्यवर फेलिक्स टोप्पो को मैं हार्दिक शुभकामनायें अर्पित करता हूँ। पवित्र आत्मा आपको हमेशा उत्प्रेरित करता रहे कि आप भले चरवाहे — प्रभु येसु मसीह — की रेवड़ को उचित नेतृत्व देते रहें।

दोनों सहायक धर्माध्यक्ष, मान्यवर तेलेस्फोर बिलुंग और मान्यवर थेओदोर मस्कारेनस सहित सभी धर्माध्यक्ष बन्धुओं के प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। उनकी मित्रता, सहयोग और विचार-विमर्श से ही पवित्र आत्मा की उत्प्रेरणा को पहचानने और उसका अनुपालन करने में मुझे सहयोग मिलता रहा। अन्त में, मैं अपनी त्रुटियों के लिए आप सबके प्रति क्षमा प्रार्थी हूँ। तृत्वमय ईश्वर का आशीर्वाद और माता मरियम की वात्सल्यपूर्ण मध्यस्थता आप सबपर हमेशा बनी रहे। सबों को जय येसु और धन्यवाद।"

संकलित समाचार

नये आवास के लिए कार्डिनल तेलेस्फोर का प्रस्थान

सितम्बर 1, शनिवार. आज महामहिम कार्डिनल, तेलेस्फोर पी॰ टोप्पो ने आर्चबिशप हाऊस राँची से विदा लेकर उल्हातु स्थित अपने नये आवास के लिए प्रस्थान किया। अपराह्न 3 बजे राँची महागिरजाघर में मान्यवर तेलेस्फोर बिलुंग, सहयोगी बिशप की अगुवाई में एक प्रार्थना सभा सम्पन्न हुई। राँची के महाधर्माध्यक्ष के पद पर कार्डिनल द्वारा विगत 33 वर्षों तक सफलता पूर्वक उत्तरदायित्व निभाने के लिए सबने ईश्वर को धन्यवाद दिया। तत्पश्चात् बड़ी संख्या में पुरोहितों, धर्मबहनों और लोकधर्मियों ने उल्हातु के लिए प्रस्थान किया। जब महामहिम कार्डिनल का काफिला उल्हातु पल्ली के सिमाने पर पहुँचा, तब भारी वर्षा के बावजूद विश्वासियों ने उत्साह से उसका स्वागत किया। वहाँ से कतारबद्ध मोटरसाइकिल सवार युवाओं ने कार्डिनल की अगुवाई की। उल्हातु पहुँचने पर "ईश्वर की माता और प्रज्ञा का सिंहासन" लघु महागिरजा में पल्ली वासियों के साथ बेनेदिक्शन की धर्मविधि सम्पन्न हुई। फिर स्थानीय महिलाओं ने उत्साह भरे स्वागत और नाच के साथ कार्डिनल महोदय को पल्ली भवन में निर्मित उनके नये आवास तक पहुँचाया। ज्ञातव्य है कि लघु महागिरजा कार्डिनल महोदय की दीर्घवांछित योजना रहा है। परमधर्मपीठ के दिशा निर्देश के अनुरूप पल्ली गिरजाघर का नवीकरण करके उन्होंने 8 दिसम्बर 2016 को माता मरियम के निष्कलंक गर्भागमन पर्व पर इसे आशीष देकर लोकार्पित किया।

संयोजक, मान्यवर बिशप तेलेस्फोर बिलुंग निम्नलिखित व्यक्तियों/संस्थाओं को उनके द्वारा महामहिम कार्डिनल को दिये गये उदार सहयोग-दानों के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं :

1) माता जेनेरल, आदरणीया लिंडा मेरी वॉन, डी॰एस॰ए॰ — ए॰सी॰ सेट

2) प्रोविंशल सुपीरियर, फा॰ जोसेफ मरियानुस कुजूर, ये॰सं॰ — इन्वर्टर सेट
3) प्रोविंशल सुपीरियर, सि॰ सुचिता शालिनी ख़लख़ो, ओ॰एस॰यू॰ — सोफा सेट
4) सन्त अलबर्ट सेमिनरी, राँची — पवित्र साक्रामेन्त रखने का संदूक
5) सभी सन्तों का गिरजाघर, डोरंडा — कपड़े धोने की एक मशीन
6) सन्त जेम्स चर्च, लालपुर — एक फ्रिज़
7) सन्त मरिया महागिरजाघर पल्ली, राँची — एक टी॰वी॰ सेट
8) सन्त फ्रान्सिस असीसी चर्च, हरमु — दो स्टील पुस्तक-आलमारियाँ
9) सन्त अन्तोनी चर्च, सपारोम — एक ऑफिस कुर्सी
10) लूर्द्स की माता चर्च, सामलोंग — रु॰ 25,000/- मात्र
11) येसु का पवित्र हृदय चर्च, बरियातु — रु॰ 25,000/- मात्र
12) सुपीरियर डेलेगेट, फा॰ मार्क, ओ॰सी॰डी॰ — रु॰ 25,000/- मात्र
13) महिला संघ, राँची — रु॰ 10,000/- मात्र
14) उर्सुलाईन निकेतन, छात्रावास, राँची — रु॰ 15,000/- मात्र
15) फा॰ रोशन तिडू, एस॰डी॰सी॰; ओब्लेट धर्मबहनें, फा॰ रोबिन दोस्स — सक्रिस्टी सामान

रायगंज में धर्माध्यक्षीय अभिषेक सम्पन्न

रायगंज. अगस्त 28, शुक्रवार. आज स्थानीय संत जोसेफ कैथीड्रल के परिसर में 52 वर्षीय श्रद्धेय फा॰ फुलजेन्स अलोईसियुस तिग्गा का धर्माध्यक्ष

अभिषेक सम्पन्न हुआ। कोलकाता के महाधर्माध्यक्ष, अति माननीय थोमस डीसूजा मुख्य अभिषेककर्ता थे। बागडोगरा के धर्माध्यक्ष भिन्सेंट आईन्द और बेतिया के धर्माध्यक्ष पीटर सेबास्तियन गोवेयस सहअभिषेककर्ता थे। रायपुर और राँची के महाधर्माध्यक्षों के साथ अन्य आठ धर्माध्यक्षों ने इस पावन धर्मविधि में भाग लिया। पुरोहितों की संख्या तकरीबन 150 थी और उपस्थित करीब 12 हज़ार विश्वासीगण में से आधे लोग पंडाल के नीचे थे और आधे खुले मैदान में। मनोहर संथाली नृत्य और मधुर गीतों के मध्य अभिषेक की समारोही धर्मविधि सम्पन्न हुई। मोन्सिन्योर फेरनान्दो दोमिंगो एस॰ ने संत पापा फ्रान्सिस का अभिषेक वाला आदेशपत्र पढ़कर सुनाया। बंगला, संथाली और हिन्दी भाषाओं में धर्मविधि सम्पन्न की गई। धर्माध्यक्ष फुलजेन्स तिग्गा का जन्म 3 मार्च 1965 को गुमला धर्मप्रान्त की कटकाही पल्ली में हुआ। उनका पावन पुरोहिताभिषेक 3 मई 1997 को मुज़फ्फरपुर धर्मप्रान्त के लिए हुआ। उक्त धर्मप्रान्त के विभाजन के बाद वे बेतिया धर्मप्रान्त के लिए काम करने लगे। लम्बे समय तक पल्लियों में बखूबी सेवायें देने के अलावा उन्होंने धर्मप्रान्त की कई जिम्मेदारियाँ निभायी।

कोन्सटंट लीवन्स अस्पताल सम्मानित

राँची. 25 अगस्त, शनिवार. क्षेत्र की गैरसरकारी स्वास्थ्य संस्थाओं की श्रेणी में दो अन्य के साथ कोन्सटंट लीवन्स अस्पताल सह अनुसंधान केन्द्र माँडर को आज संध्या श्रेष्ठता का सम्मान दिया गया। अस्पताल की

चिकित्सा निदेशक, डॉ॰ सि॰ आइलिन कुजूर ने अपनी नयी सहयोगी डॉ॰ सि॰ विमल ज्योति के साथ सम्मान-स्मारिका को ग्रहण किया। कोन्सटंट लीवन्स अस्पताल के शुरुआती दौर में ही इस संस्थान को नागरिक सम्मान दिया जाना मानव-सेवा की मसीही पहल के प्रति प्रशंसा के लोक उद्गार को दर्शाता है। क्षेत्र के एक प्रमुख अखबार द्वारा प्रायोजित इस अभिनन्दन समारोह में विभिन्न विशिष्टताओं के 26 डॉक्टरों को भी सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि आदिवासी बहुल समाज के गरीब रोगियों की उत्कृष्ट चिकित्सा-सेवा कम कीमत पर करने के लिए भारतीय काथलिक धर्माध्यक्षीय सम्मेलन (सी॰बी॰सी॰आई॰) ने माँडर में 7 नवम्बर 2015 को उक्त अस्पताल सह अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की। यह संस्थान मेडिकल कॉलेज बनने की दिशा में आगे बढ़ता जा रहा है।

धर्मबहनों का आजीवन व्रतधारण

राँची. सिस्टर्स ऑफ़ चारिटी ऑफ़ जीज़स ऐंड मेरी (एस॰सी॰जे॰एम॰) धर्मसमाज की 11 धर्मबहनों ने 9 सितम्बर को और उर्सुलाइन सिस्टर्स ऑफ़ टिल्डोंक (ओ॰एस॰यू॰) धर्मसमाज की 10 धर्मबहनों ने 15 सितम्बर को आजीवन व्रतधारण किया। युखरिस्तीय बलिदान के दरम्यान व्रतधारण की धर्मविधि क्रमशः हीनु स्थित एस॰सी॰जे॰एम॰ के निर्मला कॉलेज हॉल में तथा ओ॰एस॰यू॰ प्रोविन्शलेट के प्रांगण में सम्पन्न हुई। इस पावन समारोह के मुख्य अनुष्ठाता महाधर्माध्यक्ष फेलिक्स टोप्पो, ये॰स॰ थे। उनके साथ कई पुरोहितगण सहअनुष्ठाताओं के रूप में उपस्थित थे। दूर-दराज से बड़ी संख्या में उनके धर्मसमाजों की धर्मबहनों और व्रतधारण करने वाली धर्मबहनों के रिश्तेदारों ने इन लम्बी धर्मविधियों में भाग लिया। महाधर्माध्यक्ष के सामने धर्माधिकारिणियाँ सिस्टर लिली पल्लीपुरथ और सिस्टर सुचिता शालिनी ख़लख़ो ने अपनी-अपनी धर्मबहनों के व्रतों को ग्रहण किया। तत्पश्चात् प्रत्येक व्रतधारण करने वाली धर्मबहन का उनके रिश्तदारों ने गानों और उपहारों से आनन्दपूर्वक स्वागत् किया।

एस॰आर॰ए॰ धर्मबहनों की दसवीं सामान्य आम सभा

राँची. प्रेरितों की रानी की मिशनरी धर्मबहनों (एस॰आर॰ए॰) की दसवीं सामान्य आमसभा 23 सितम्बर — 16 अक्टोबर के दरम्यान मुम्बई में चल रही है। आमसभा का विषय है, "एस॰आर॰ए॰ : सुसमाचार की सेवा में करुणा और आनन्द की मिशनरी शिष्यायें।" उनके एक वक्तव्य के अनुसार उक्त आमसभा "सन्त पापा फ्रान्सिस द्वारा हाल के वर्षों में दी गई शिक्षा के आलोक में धर्मसंघी बुलाहट में सन्निहित मूल मान्यताओं, जीवनचर्या और मिशन की प्राथमिकताओं" पर विचार-विमर्श कर रही है। मतदान के अधिकार सहित इस आमसभा में अपनी प्रोविंशल सुपीरियर के साथ राँची से 6 धर्मबहनें सम्मिलित हैं।

उल्हातु विकारिएट महिला संघ की आमसभा मुरी में सम्पन्न

मुरी. 16 सितम्बर, रविवार. अपनी 12वीं आमसभा में आज यहाँ उल्हातु विकारिएट काथलिक महिला संघ ने परिवार, समाज और व्यापक कलीसिया में

माताओं की भूमिका पर विचार-विमर्श किया। "महिलायें, सेतु निर्मातृ!" विषय पर मंथन करते हुए उन्होंने समुदाय में क्षमादान और मेल-मिलाप को नये सिरे से स्थापित करने का संकल्प लिया। मुरी के पल्ली पुरोहित, येसुधर्मसंघी फा॰ जेम्स वि॰ डुंगडुंग ने अपने वक्तव्य में जोर दिया कि माताओं की "कार्य-योजना" में "प्रेम और करुणा" को केन्द्रीय स्थान दिया जाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि समय की गति के अनुरूप आगे बढ़ने के लिए सुसमाचारी साक्ष्य के साथ वर्तमान तकनीकी साधनों का सन्तुलित मिलान भी जरूरी है। अपने वक्तव्य को वीडियो क्षणिकाओं के साथ पुष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि पिता ईश्वर से हमारे रिश्तों के सच्चे पुल-निर्माणकर्ता प्रभु येसु मसीह हैं। वे ही पिता के साथ हमारे टूटे रिश्ते को दुबारा जोड़ते हैं। स्थानीय उर्सुलाईन कॉन्वेंट परिसर में हुए इस कार्यक्रम के शुरू में उल्हातु विकारिएट के डीन, श्रद्धेय फा॰ मक्सीमुस टोप्पो ने महिला संघ का ध्वजोत्तोलन किया और समारोही पवित्र मिस्सा पूजा में मुख्य अधिष्ठाता रहे। महाधर्मप्रान्त भर की दिवंगत सदस्याओं के लिए मौके पर मौन प्रार्थना चढ़ायी गयी। लगभग डेढ़ हजार व्यक्तियों की उपस्थिति में पंजीकृत भागीदारों की संख्या बारह सौ रही। सलाहकारों और संचालकों से मिले पूरक विचारों के बीच भविष्य में ऐसे अवसर के अवधि-बिस्तार के प्रस्ताव सुनाई पड़े ताकि विषयवस्तु को अपेक्षित गहराई

दी जा सके। मुरी पल्ली के विश्वासीगण अच्छे सेवा-सत्कार के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

विश्व मिशन रविवार-2018

- **सन्त पापा पियुस ग्यारहवें ने वर्ष 1926 में विश्व मिशन रविवार की शुरूआत की। प्रतिवर्ष यह उपलक्ष्य अक्टोबर माह के अंतिम रविवार से पहले वाले रविवार पर पड़ता है। इस वर्ष यह 21 अक्टोबर को पड़ रहा है।**
- **इस दिन सुसमाचारी साक्ष्य अभियानों के लिए प्रार्थना, सहयोग तथा अर्थदान द्वारा विश्व व्यापी काथलिक कलीसिया इस सम्बन्ध में अपने संकल्प और प्रतिबद्धता का नवीकरण करती है।**
- **"युवाओं द्वारा विश्वास और बुलाहट की विवेकपूर्ण पहचान" विषय पर अक्टोबर 3-28 के दौरान धर्मगुरुओं की महासभा वाटिकन में विचार-विमर्श करेगी। इसलिए इस वर्ष के विश्व मिशन रविवार का विषय है, "हम युवाओं के साथ मिलकर सुसमाचारी संदेश को सब लोगों तक पहुँचायें।"**

अकसर सन्त पिता विशेष घटनाओं/उपलक्ष्यों के मतलब और महत्व की संक्षिप्त घोषणा नियत तिथि से पहले ही — यहाँ तक कि तत्सम्बन्धी दस्तावेज के प्रकाशन से पहले ही — कर देते हैं। माना जा सकता है कि उन्होंने 15 जुलाई को सन्त पेत्रुस महागिरजाघर के प्रांगन में रविवारीय अंजेलुस प्रार्थना संदेश के समय ऐसा किया। प्रस्तुत है, उस संक्षिप्त संदेश का सार :

सन्त पापा फ्रान्सिस ने कहा कि बारह शिष्यों को बुलाये जाते समय (देखें, मारकुस 6:7-13) हमारे प्रभु येसु मसीह ने शिष्यता की प्राथमिकता को इस प्रकार निर्धारित किया, "वे लोग उनके साथ रहें।" (मारकुस 3:14) इसका मतलब है, शिष्यों द्वारा प्रभु येसु के साथ रहकर उनके वचनों को सुनना और उनके द्वारा की जा रही चंगाई के कामों में मुक्तिसंदेश को पहचानना। दूसरे शब्दों में, सुसमाचारी संदेशवाहक का पहला कर्त्तव्य है कि वह प्रभु येसु के व्यक्तित्व को ही पहला संदर्भ बनाकर चले। जहाँ तक सुसमाचारी संदेश की उद्घोषणा की बात है, वह संदेश न तो शिष्यों की अपनी विभूति है और न ही वे अपने सामर्थ्य से उसका निरूपण करते हैं। बल्कि वे तो प्रभु द्वारा संदेशवाहक के रूप में "भेजे जाने" के कारण ही उनके संदेश को उच्चारते और उसपर अमल करते हैं। उनसे आशा की जाती है कि वे जो कुछ बोलें और करें, प्रभु को ही प्रचारित-प्रसारित किया करें।

संदेशवाहक द्वारा की जा रही सुसमाचारी उद्घोषणा के तौर-तरीके की दूसरी विशेषता है कि उसके संसाधनों में दरिद्रता समाहित रहे। वस्तुतः प्रभु येसु ने बारह शिष्यों को इस सम्बन्ध में स्पष्ट आदेश दिया कि "वे लाठी के सिवा रास्ते के लिए कुछ भी नहीं ले जायें — न रोटी, न झोली, न फेंटे में पैसा।" (पदसंख्या 8) लाठी और चप्पल तो तीर्थ यात्रियों के व्यवहार की चीजें हैं और उन्हें धारण किये हुए लोग ईश्वर के राज्य के विनम्र संदेशवाहक और मजदूर हैं — वे सर्वसत्ताधारी प्रबन्धक, निर्विकल्प कार्यकर्त्ता और दौरे पर निकले हुए कलाकार नहीं हैं।

सन्त पापा ने कहा कि सुसमाचारी अभियान में असफलता का अनुभव भी दरिद्रता का हिस्सा है। प्रभु येसु की उपेक्षा, उनकी सतावट का दुःखद अनुभव और उन्हें क्रूस पर मार डाला जाना सुसमाचार के संदेशवाहक की भी नियति है। उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान में धैर्यपूर्ण सहभागिता द्वारा ही हम सुसमाचारी संदेशवाहकों को सफलता मिलती है।

प्रभु येसु की गवाही देने के लिए न केवल पुरोहितों और धर्मसंघियों को सुसमाचारी बुलावा मिला है, बल्कि विभिन्न जीवन-दशा में जी रहे बपतिस्मा संस्कार पाये हुए सब लोगों को यही बुलावा मिला हुआ है। कोई व्यक्ति अपने सामर्थ्य से सुसमाचार की साक्षी नहीं देता। कलीसिया ही उसे यह काम सौंपती है, क्योंकि स्वयं प्रभु येसु ने उसे यह आज्ञा दी है। प्रार्थना करने, जीवन-साक्ष्य देने और सुसमाचारी अभियानों की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने में उदारता दिखाने के लिए विश्व मिशन रविवार मसीही समुदायों का आह्वान करता है। माता मरियम की मध्यस्थता माँगते हुए सन्त पापा ने कहा कि दिव्य शब्द की पहली शिष्या और संदेशवाहक, कुँवारी मरियम हमारी मदद करे कि हम सुसमाचारी संदेश को दुनिया के साथ बाँट सकें!

"सुसमाचारी अभियान कलीसिया को याद दिलाता है कि वह अपने आप में परिपूर्ण नहीं, बल्कि वह तो ईश्वर के राज्य का एक विनम्र साधन और मध्यस्थ है।"— सन्त पापा फ्रान्सिस (दे० विश्व मिशन रविवार - 2018 के लिए जारी संदेश, 7)

Programme of Archbishop Felix Toppo
October 2018

Dates	Events	Time	Place
06	Final Commitment of Assisi Brothers	10.00 am	Samlong
07	Mass, St. Francis of Assisi Church	06.00 am	Harmu
12	Krusveer Rally at Chhipadohor, Daltonganj	05.00 pm	Chhipadohor
13	Holy Eucharist	07.00 am	Chippadohor
14	Final profession, St. Joseph of Apparition	10.15 am	Mosaboni
15 -17	Caritas India Reg. Fora Chairmen & Directors' Meet Bangalore		Bangalore
24	Mass at Claret Vidyaniketan	10.15 am	Saparom
28	Dhori Mata Feast, Mass	10.00 am	Dhori
29	Final profession of Brothers of Charity	09.00 am	Simlia
30	Mass : Golden Jubilee of Carmel Convent	06.30 am	Samlong
31	Golden Jubilee Programme, Carmel School	05.00 pm	Samlong

Bishop Telesphore Bilung's Programme
October 2018

Dates	Events	Time	Place
4	Feast of St. Francis of Assisi – Holy Eucharist	6.30am	Harmu Parish
13	Feast of CTC Sisters – Holy Mass	–	Hardag, Hulhundu Parish
14	Silver Jubilee of Banhora Church	6.30am	Banhora Parish
15	First Profession – Vincent de Paul Sisters	9.00am	Kokar Parish
17	Village Chapel Blessing		Rogo Village
20-22	Pune		Pune
	November 2018		
4	Confirmation		Saparom